पीजीआई-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं इंफॉर्मेटिक्स विभाग के बीच करार, सेंटर फॉर एक्सीलेंस भी बनेगा

पीजीआई बनाएगा चिकित्सा उपकरण

अच्छी खबर

लखनऊ | संवाददाता

पीजीआई अब बीमारियों की पहचान और उपचार के साथ चिकित्सा उपकरण भी बनाएगा। यहां के डॉक्टर बीमारी की जांच और इलाज में प्रयोग होने वाले उपकरण इंजीनियर और उद्यमियों के साथ मिलकर प्रोटोटाइप तैयार करेंगे। इसमें बीपी मशीन, शुगर जांच की मशीन, अल्ट्रा सांउड, थर्मामीटर, स्टंट, इम्प्लांट, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी शामिल होंगे। स्वदेशी उपकरणों की कीमत कम होगी। उपकरणों का निर्माण पीजीआई में बने मेडिकल सेंटर फार एक्सीलेंस में होगा।

पीजीआई निदेशक डॉ. आरके धीमन बताते हैं कि यह सेंटर संस्थान में लाइब्रेरी भवन में 15 हजार वर्ग फुट में करीब 22 करोड़ रुपये से तैयार होगा। इसमें 50 स्टार्टअप को चुना जाएगा। ये स्टार्टअप मेडिकल इलेक्ट्रॉनिक्स और स्वास्थ्य सूचना विज्ञान में काम करेंगे। पीजीआई और केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं इंफॉर्मेटिक्स विभाग ने काम शुरू कर दिया है।

पीजीआई के सीवी रमन ऑडिटोरियम में शनिवार को मेडटेक सेंटर फॉर इंटरप्रेन्योरशिप का उद्घाटन किया गया।

22 हजार करोड़ से पीजीआई में बनेगा सेंटर फॉर एक्सीलेंस

50 स्टार्टअप उपकरणों के निर्माण के लिए चुने जा चुके हैं।

80% उपकरण विदेश में बने प्रयोग हो रहे

डा. धीमन ने बताया कि अभी चिकित्सा उपकरणों में 80 फीसदी दूसरे देशों के बने प्रयोग हो रहे हैं। देशी तकनीक पर आधारित मेडिकल उपकरण सेंटर में कम कीमत पर उपलब्ध होंगे। इससे मरीजों को सस्ता इलाज मिलने के साथ शोध का दायरा भी बढ़ेगा। चिकित्सा क्षेत्र में जांच, ऑपरेशन के अलावा विभिन्न अंगों में लगने वाले स्टंट, इम्लांट, बहुत से इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की जरूरत होती है। अभी इनके लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता है, जिनकी कीमत ज्यादा है।

इलाज में डेटा साइंस बनेगा मददगार

संस्थान निदेशक डॉ. धीमन ने बताया कि डेटा सांइस की मदद से मरीजों के डाटा के आधार पर बीमारियों की पहचान व उपचार में आसान होगी। यहां के मरीजों के डेटा का इसमें प्रयोग करेंगे। शोध कार्यों और मेडिकल उपकरणों के स्टार्टअप व्यवसाय को विकसित करने में इनक्यूबेशन सेंटर का अहम योगदान है। यह सेंटर प्रारंभिक चरण में स्टार्टअप्स के लिए संजीवनी का काम करते हैं। यह सेंटर व्यापारिक एवं तकनीकी सुविधाओं, सलाह, नेटवर्क को विस्तार देगा।

कोरोनाकाल में स्टार्टअप ने दी राहत

लखनऊ | संवाददाता

भारत विश्व का सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम है। यूपी में एक साल के भीतर दो हजार से ज्यादा स्टार्टअप शुरू हुए हैं। इससे रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं।

ये बातें पीजीआई में शनिवार को सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क ऑफ इंडिया के मेडटेक सेंटर फॉर इंटरप्रेन्योरशिप के उद्घाटन पर केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने कहीं। उन्होंने कहा कि स्टार्टअप की संख्या 3200 से 5291 हो गई है। कोरोनाकाल में डिजिटल इंडिया की उपयोगिता बढ़ी है। घर बैठे परामर्श-उपचार मिला है। कानून मंत्री बृजेश पाठक ने कहा कि देश में चिकित्सा का दायरा बढ़ रहा है। एक दिन विदेश के लोग इलाज कराएंगे। राज्य मंत्री स्वाति सिंह ने कहा कि स्टार्टअप में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। एकेटीयू वीसी विनीत कंसल ने उपकरण बनाने में पीजीआई को मदद का भरोसा दिया। अपर मुख्य सचिव आईटी अरविंद कुमार ने कहा कि एक्सीलेंस सेंटर को पांच साल में करीब 22.25 करोड़ दिये जाएंगे। इसमें दस करोड़ रुपये प्रदेश सरकार देगी। 15 जिलों में कुल 41 इंक्यूबेटर सेंटर स्थापित हो चुके हैं।

सॉफ्टवेयर पार्क के लिए 15 स्टार्टअप चयनित

एसटीपीआई महानिदेशक अरविन्द कुमार ने कहा कि सॉफ्टवेयर पार्क के तहत 15 स्टार्टअप चुने गए हैं। शनिवार 12 स्टार्टअप ने अपने-अपने मॉडल के प्रोटो टाइप के जरिए जानकारी दी। यह स्टार्टअप कई जिलों के हैं। इन्हें काम करने की जगह, आईओटी लैब, हाईस्पीड इंटरनेट, बौद्धिक संपदा मार्केटिंग, फंडिंग के लिए सहायता दी जाएगी। मेडिकल उपकरण में मदद पीजीआई करेगा।